Post Graduate Programme

M.A. (Maithili)

Semester - II

Paper - CC-7 Paper code - MTL 523 Topic - अलंकार (Unit - IV)

'अप्रस्तुतप्रशंसा' अलंकारक सोदाहरण परिभाषा

परिभाषा - अप्रस्तुत (उपमान) सँ प्रस्तुत (उपमेय) क कथन होएबाकेँ 'अप्रस्तुतप्रशंसा' अलंकार होइछ।'

अप्रस्तुतप्रशंसाक अर्थ अप्रस्तुतक वर्णन अछि। एतए प्रशंसा शब्द प्रशंसा वाचक नहि, अपितु ओ सामान्य वर्णन अथवा कथन मात्रक बोध करबैत अछि। एहिमे वर्णन तँ करल जाइत अछि अप्रस्तुतक, मुदा ओहिसँ प्रस्तुतक अर्थ निकलैछ, यथा - महाकवि विद्यापतिक प्रसिद्ध पद्यांश -

"कतहक मास कुसुम परगास। भमर विकल नहि पावए पास।
रसमति मालति पुन पुन देखि। पिबए चाह मधु जीव उपेखि।"

प्रस्तुत पद्यांशमे प्रेमीक दिससँ सखी द्वारा प्रेयसीक प्रबोधन अछि, मुदा वर्णन भ्रमर ओ मालतीक उद्वेगक भेल अछि। एतए अप्रस्तुत भ्रमर ओ मालतिक वर्णनसँ प्रस्तुत प्रेमिका (प्रेयसी) क प्रसंग विषयक अभिव्यंजना होइछ, तँ एतए अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकार अछि।

अथवा

"भनइ विद्यापति कोमल कांति,
कौसल सिरिस-सुमन अलि भाँति।"
- विद्यापति

एतए 'कोमलांगी नारिक संग पुरुषकेँ कोमलतेसँ

व्यवहार करबाक चाही'- एहि प्रस्तुतक बोध अप्रस्तुत शिरीषपुष्प आ भ्रमरक व्यवहारक उल्लेखसँ कराओल गेल अछि, अत: एतए 'अप्रस्तुतप्रशंसा' अलंकार भेल।

अप्रस्तुतसँ प्रस्तुतक ई प्रतीति पाँच प्रकारेँ सम्भव अछि-

(क) अप्रस्तुत कारणक वर्णनसँ प्रस्तुत कार्यक प्रतीति- कारणनिबन्धना।

(ख) अप्रस्तुत कार्यक वर्णनसँ प्रस्तुत कारणक प्रतीति- कार्यनिबन्धना।

(ग) अप्रस्तुत विशेषक वर्णनसँ प्रस्तुत सामान्यक प्रतीति- विशेषनिबन्धना।

(घ) अप्रस्तुत सामान्यक वर्णनसँ प्रस्तुत विशेषक प्रतीति- सामान्यनिबन्धना।

(ङ) अप्रस्तुत तुल्यवस्तुक वर्णनसँ प्रस्तुत तुल्यवस्तुक प्रतीति- सारूप्यनिबन्धना।

---

1. "अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया।" सूत्र सं०- 98, दशमोल्लास, 'काव्यप्रकाश', मम्मट।
2. गीत सं०- 160, 'विद्यापति गीतावली', सं.पं. गोविन्द झा।

प्रोफेसर (डॉ.) वीरेन्द्र झा
मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना।